Toppersnotes®
Unleash the topper in you

बिहार

डी. एल. एड. (D.El.Ed)

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (BSEB)

भाग - 1

सामान्य हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

संस्करण – **December-2024**

कॉपीराइट © 2024 **SIERRA INNOVATIONS PVT. LTD.**

सभी अधिकार सुरक्षित है। इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति बिना प्रस्तुत या वितरित या किसी भी तरह से जिसमें फोटोकॉपी या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या मैकेनिकल तरीके शामिल है, में प्रेषित नहीं हो सकता है। किसी भी प्रकार की छेड़छाड या संशोधन करना कॉपीराइट कानूनों का उल्लघंन होगा और कानूनी कार्यवाही के लिए उत्तरदायी होगा। सम्पादक का नैतिक अधिकार प्रमुख किया गया है। यह SIERRA INNOVATIONS PVT. LTD. के द्वारा मुद्रित किया गया है।

किसी भी प्रकार की समस्याओं, सुझावों और फीड़बैक के लिए सम्पर्क करें :–

hello@toppersnotes.com

मुख्य कार्यालय – टॉपर्सनोट्स
SIERRA INNOVATIONS PVT. LTD.
H–176, ओसवाल फैक्ट्री के पास,
मालवीय नगर इंडस्ट्रियल एरिया,
मालवीय नगर, जयपुर,
राजस्थान–302017

Website- www.toppersnotes.com
Email- hello@toppersnotes.com
Phone – 9614-828-828

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्ण विचार	1
2	संज्ञा	5
3	सर्वनाम	7
4	विशेषण	8
5	क्रिया	9
6	लिंग	16
7	कारक	19
8	समास	22
9	संधि	28
10	उपसर्ग	44
11	प्रत्यय	53
12	वाक्य विचार	61
13	मुहावरे	68
14	लोकोक्तियाँ	74
15	रस	77
16	छंद	79
17	अलंकार	87
18	पद बंध	91
19	वाक्य रचना	93
20	विलोम शब्द	97
21	पर्यायवाची	103
22	तत्सम – तद्भव शब्द	105
23	देशज शब्द	107

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	पारिभाषिक शब्दावली	111

1 CHAPTER वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं ।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना।
- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह् अ म् अ) है ।

<u>लिपि</u> –किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विषेशताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण – हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता।

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है।

जैसे :– क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :– 2 प्रकार है।

(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :– स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है। हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :– मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार है ।

(i) ह्रस्व स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे कम समय लगता है हस्व स्वर कहलाते है।

जैसे – अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या – 4)

नोट :– (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे मुल स्वर से अधिक समय/ दुगुना समय लगता है। वे दीर्घ स्वर कहलाते है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, (कुल संख्या –7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है । स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।

जैसे – अ^3, आ^3, इ^3, ई^3, उ^3, ऊ^3, ए^3, ऐ^3, ओ^3, औ^3,

(2) उच्चारण के आधार पर :– (2 प्रकार है)

(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर निकलती है ।

नोट – अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।

जैसे – अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है।

बिना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर – (3 प्रकार है)

(i) अग्र स्वर :– उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।

जैसे – इ, ई, ए, ऐ

(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।

जैसे – आ, उ, ऊ, ओ, औ , ऑ

पहचान :– निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार है ।

(i) वृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना।

जैसे :– उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर–नीचे फैलना।

जैसे – अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार है।

(i) संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना। जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) विवृत – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा/पूरा खुलना। जैसे – आ

(iv) अर्द्धविवृत – उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना।
जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है।

हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है ।

जिनको तीन भागों में बाँटा गया है ।

(i) स्पर्श व्यंजन – (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)

(ii) अंतः स्थ व्यंजन – (04)

(iii) ऊष्म व्यंजन – (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करते मुख से बाहर निकलती है वह स्पर्श व्यंजन कहलाते है ।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –

(अ) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ङ्.

(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्

(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्

(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्

(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है ।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4 है ।

जैसे :– य् व् र् ल्

(iii) ऊष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है।

कुल ऊष्म व्यंजन – 4 है।

जैसे – श, स, ष, ह

संयुक्त व्यंजन – इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है ।

क्ष – ष् + अ

त्र – त् + र + अ

ज्ञ – ज् + ञ्+ अ

श्र – श् + र् + अ

व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार का है ।

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर

(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

स्वर – युक्त व्यंजन व उनका वर्गीकरण–

(अ) उच्चारण स्थान के आधार पर –

उच्चारण स्थान	नाम ध्वनि	वर्ग	व्यंजन	स्वर
कंठ	कंठ्य	क वर्ग	क ख ग घ ङ ह	अ आ
तलु	तालव्य	च वर्ग	च छ ज झ ञ य श	इ ई
मूर्द्धा	मूर्द्धन्य	ट वर्ग	ट ठ ड ण ड़ ढ़ ष र	ऋ
दाँत	दन्त्य	त वर्ग	त थ द ध न ल स	
ओष्ठ	ओष्ठ्य	प वर्ग	प फ ब भ म	उ ऊ
कंठ व तालु	कंठ्य–तालव्य			ए ऐ
दाँत व ओष्ट	दन्तोष्ठ्य		व	
कंठ व ओष्ठ	कंठोष्ठ्य			ओ औ
नासिक्य			ङ्., ञ् ण् न् म्	

2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –

(i) कंपन के आधार पर

(ii) श्वास वायु के आधार पर

(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कम्पन्न के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) **अघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वरतंत्रियो में कम्पन्न नहीं होता है अघोष कहलाते है। इसमें वर्ग का पहला,दुसरा वर्ण तथा श, स, ष आते है।

b) **घोष/सघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वर तंत्रियों मे कम्पन्न होता है घोष/सघोष कहलाते है

इसमे वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण तथा य. र, ल, व, ह और सभी स्वर आते है।

(ii). श्वास वायु के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) अल्प प्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय कम वायु बहार निकलती हो, अल्प प्राण कहलाते हैं।

b) महाप्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु की आवश्यकता होती है, महाप्राण कहलाता है।
इसमे दुसरा, चौथा वर्ण तथा श,स,ब,ह आते है।

(iii). उच्चारण के आधार पर –

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते है ।

a. स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
b. स्पर्श संघर्शी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
c. संघर्षी व्यंजन (4) – ष, श, स, ह
d. नासिक व्यंजन (5) – ड., ञ, ण, न, म
e. उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड, ढ
f. प्रकंपित व्यंजन (1) – र
g. पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
h. संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य (''वर्ण विचार'' से संबंधित)

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।

	समानाक्षर स्वर	संधि स्वर
(i)	आ – अ + अ	ए – अ + इ
(ii)	ई – इ + इ	ऐ – अ – ए
(iii)	ऊ – उ + उ	औ – अ + ओ

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

क़ – क़रीब
ख़ – ख़ाना
ग़ – ग़म
ज़ – ज़रा
फ़ – फ़न, फ़ाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (ऍ)
जैसे – कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अग्रेजी भाषा से हुआ है।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान ''विप्रसाद सितारे हिंद'' को जाता है।
- काकल वर्ण के अन्तर्गत, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है।
- वर्त्स वर्णो में न, स, ल को शामिल किया जाता है।
- इसकी कुल संख्या चार होती है।
  (1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ)
  (3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोड़ा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते है।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होनें का परिचायक है । स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खड़ी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खड़ी पाई हटा दी जाती है। उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है।
  जैसे– विद्या, पाठ्य, अपराह्न, पट्टा आदि।
  1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है।
  2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है।
  3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है।
  4. ईशत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है।
  5. ईशद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (ष, श, स, ह)
  6. रक्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
  7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

नोट – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ण होते है।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें।

स्वर	व्यंजन	कुल
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड., ढ. + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	क़ ख़ ग़ ज़ फ़ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते हैं।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूध्र्दा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।

जैसे – ड. ढ.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, अड्डा, खण्ड, मण्डल आदि ।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है।
  जैसे – पढ.ाई, लड.ाई, सड़क, पकड़ना, ढूँढना आदि।

रकार/रेफ या र संबंधित नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात्, पुनर्जन्म, पुनर्निमाण, आशीर्वाद।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
- जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है। सुंदरता एक गुण का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

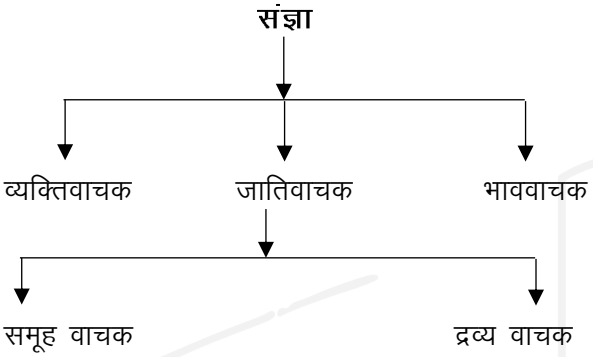

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

- व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

2. जातिवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3. भाववाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

- प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
- भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
  1. जातिवाचक संज्ञा से
  2. सर्वनाम से
  3. विशेषण से
  4. क्रिया से
  5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरता
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालाक	चालाकी
निपुण	निपुणता

शिष्ट	शिष्टता
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट / थकान
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान
सुनना	सुनवाई
कमाना	कमाई
गाना	गान
चमकना	चमक
उड़ना	उड़ान
पीना	पान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा** – ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा** – किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
   जैसे – दूध, घी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, ऑक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।
   नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।
   आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।
   सर दार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
   गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।
  जैसे –

गरीब	गरीबों
बड़ा	बड़ों
अमीर	अमीरों

3 CHAPTER सर्वनाम

परिभाषा – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।

- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।
  जैसे – अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद – सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं

1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहनें वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए, के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है

पुरुषवाचक सर्वनाम

उत्तम पुरुष | मध्यम पुरुष | अन्य पुरुष

(i) उत्तम पुरुष – बोलने वाला / लिखने वाला
जैसे – मैं, हम, हम सब।

(ii) मध्यम पुरुष – श्रोता/सुनने वाला
जैसे – तू, तुम, आप, आप सब।

(iii) अन्य पुरुष – बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारें में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. निश्चय वाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
पास की वस्तु के लिए – यह, ये।
दूर की वस्तु के लिए – वह, ये।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारें में निश्चतता का बोध नहीं होता हैं। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – कोई

- सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग
  उदा: रमन को कोई बुला रहा है।
- निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
  उदा: दूध मे कुछ गिरा है।

4. संबंधवाचक सर्वनाम – दो उपवाक्यों के बीच आकर संज्ञा या सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।
जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता हैं वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?
कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था ?

6. निजवाचक सर्वनाम – ऐसे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – आप, स्वयं, खुद, अपना।
जैसे – मैं अपने आप चला जाऊँगा।

- सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।
  (i) अगर 'आप' शब्द का प्रयोग 'तुम' शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।
  (ii) 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।
  (iii) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति से परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त हो तो वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।

Unleash the topper in you

4 CHAPTER विशेषण

परिभाषा

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है।

जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है और जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है।

जैसे – छोटा जादूगर करतब दिखा रहा है ।

यहाँ छोटा शब्द विशेषण है तथा जादूगर विशेष्य (संज्ञा) है।

विशेष – विशेषण की पहचान का तरीका

किसी भी वाक्य में कैसा/कैसी/कैसे अथवा कितना/कितनी/कितने शब्दों से प्रश्न किये जाने पर इसके उत्तर के रूप में जो कोई भी शब्द लिखा जाता है। यह विशेषण माना जाता है।

जैसे –

(i) अंकित कैसा लडका है ?
उत्तर – अंकित अच्छा/बुरा/भला/शैतान/चंचल लडका है।

(ii) हरी तुम्हारे पास कितनी गायें है ?
उत्तर – मेरे पास पाँच/दस/सौ/हजारों गाये है।

विशेषण के भेद – विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते है।

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संकेतवाचक (सार्वनामिक) विशेषण
5. व्यक्ति वाचक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण

ऐसे विशेषण शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के रंग, रूप, गुण, दोष, आकार, दशा, स्थिति, स्थान, काल, समय, आदि की विशेषता को प्रकट करते हैं, वहाँ गुणवाचक विशेषण माना जाता है।

जैसे – कृष्णमृग, सुन्दर बालिका, भले लोग, गंदी बस्ती, बड़ा लड़का, पुराना मकान आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द किसी पदार्थ की संख्या को प्रकट करे। एक, दूसरी, चौगुनी, दोनों, शतक, दर्जनों, अनेक आदि।

3. परिमाण वाचक विशेषण

ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ में मात्रा को प्रकट करते है उनमें परिमाण वाचक विशेषण माना जाता है ।

जैसे – दो लीटर तेल, हजार टन गेहूँ, थोडा सा पानी

4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण

विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते है।

जैसे – (i) यह किताब मेरी है। (ii) वह लडका खाना खा रहा है। (iii) जो लोग मेहनत करते है वे अवश्य अपनी मंजिल पाते है।

5. व्यक्तिवाचक विशेषण

ऐसे शब्द जो मूल रूप से व्यक्तिवाचक संज्ञा है परन्तु वाक्य में विशेषण का काम करती है उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाः नागपुरी संतरे, कश्मीरी सेब, बनारसी साड़ी

विशेषण की अवस्थाएँ – 3 होती है।

(i) मूलावस्था – जो विशेषण शब्द अपने मूल रूप में लिखा जाता है।

जैसे – अतुल एक अच्छा लड़का है।

(ii) उत्तरावस्था – जब कोई विशेषण शब्द दो पदार्थो की तुलना करने के लिए प्रयुक्त होता है।

जैसे – (i) गंगा यमुना से पवित्र नदी है।
(ii) मानसी पटुतर लड़की है।

पहचान – जब किसी विशेषण शब्द से पहले 'से' शब्द लिखा हो अथवा विशेषण के बाद 'तर' प्रत्यय जुडा हो तो वहाँ उत्तरावस्था मानी जाती है।

(iii) उत्तमावस्था – जब कोई विशेषण शब्द अनेक पदार्थो में से किसी एक को चुनने में काम आता है, वहाँ उत्तमावस्था मानी जाती है।

पहचान – जब विषेशण शब्द से पहले सबसे शब्द या विशेषण के बाद तम/इष्टा/तरीन प्रत्यय लगा हो वहाँ उत्तमावस्था होगी।

जैसे – (i) स्नेहा कक्षा की पटुतम बालिका है।
(ii) नवीन सबसे अच्छा लडका है।
(iii) विद्यालय में व्यवस्थाएँ बेहतरीन है।

प्रविशेषण

ऐसे शब्द जो किसी विशेषण की भी विशेषता को प्रकट करते है, वे प्रविशेषण कहलाते है।

जैसे – (i) वह बहुत तेज दौड़ता है।
(ii) अवनी अत्यंत सुंदर बालिका है।

5 CHAPTER क्रिया

- वाक्य में जिस शब्द या शब्द–समूह से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते है, जैसे – खाना, पीना, पढना, सोना, जाना।

- क्रिया का अर्थ हैं करना। क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता हैं। किसी वाक्य में कर्ता, कर्म तथा काल की जानकारी भी क्रिया पद के माध्यम से होती हैं। हिंदी भाषा की जननी संस्कृत हैं तथा संस्कृत में क्रिया रूप को 'धातु' कहते हैं।

- **धातु** – हिंदी क्रिया पदो का मूल रूप ही 'धातु' है। धातु में 'ना' जोड़ने से हिंदी के क्रिया पद बनते है।
  जैसे – पढ़ + ना = पढ़ना, उठ + ना = उठना।
  - मोहन खाना खा रहा है।
  - हवा बह रही है। (करना–हवा बहने की क्रिया कर रही है।)

उपर्युक्त वाक्यों मे 'खा रहा है' 'बह रही है' क्रियापद है।

क्रिया के भेद

वाक्य मे कर्म की संभावना के आधार पर भेद

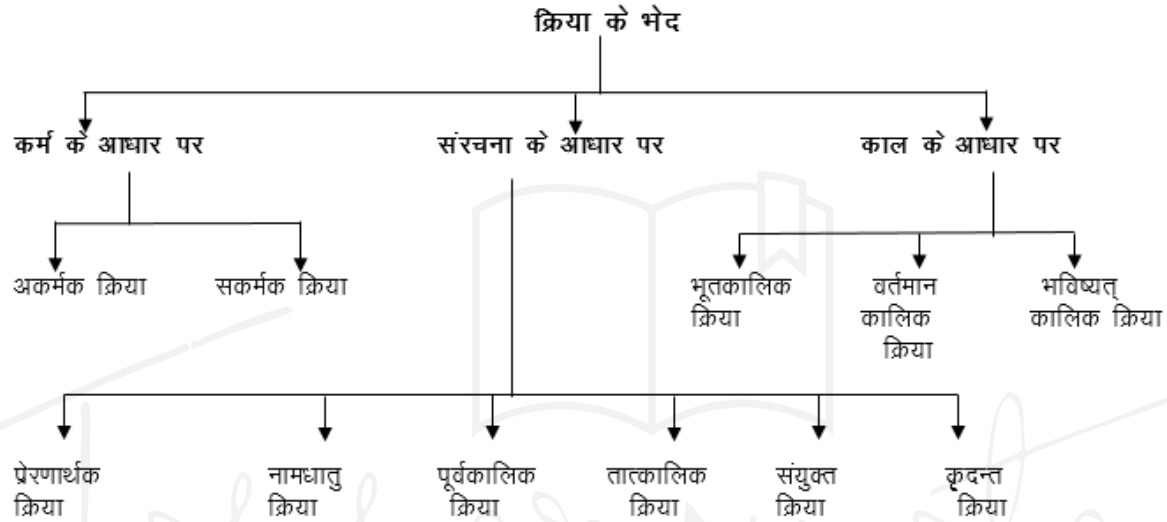

अकर्मक और सकर्मक क्रिया – किसी क्रिया के करने हेतु कर्म की आवश्यकता/संभावना होने या न होने के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद है – सकर्मक और अकर्मक।

(क) अकर्मक क्रिया

जिस वाक्य मे क्रिया का फल कर्म पर न पडकर केवल कर्ता पर ही पडता है अर्थात् जिस क्रिया के करने मे कर्म की आवश्यकता ही नही होती है, बिना किसी कर्म के क्रिया सम्पन्न हो सकती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते है, जैसे –

- रमा सोती है।
- नरेश दौड रहा है।
- चिड़िया उड़ रही है।
- बच्चा रोता है।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'सोती है', 'दौड रहा है', 'उड रही है', 'रोता है' क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः रमा, नरेश, चिडिया और बच्चा कर्ता–पदों पर ही पडता है और ये क्रियाएँ बिना किसी कर्म के केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है।

अकर्मक क्रिया को भी पुनः दो भेदों में बाँट दिया जाता हैं।

(i) अपूर्ण अकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ किसी कर्म की तो आवश्यकता नहीं होती पर किसी पूरक शब्द की आवश्यकता होती हैं। वह अपूर्ण अकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

नोट – लगना, होना, निकलना ये अपूर्ण अकर्मक क्रिया को प्रदर्शित करने वाली क्रियाएँ हैं।

जैसे –

- भेड़ प्यासी थी। } होना
- मैं एक छात्र हूँ। } होना
- वह बड़ा ईमानदार निकला। } लगना, निकलना
- वह डरावना लगता हैं। } लगना, निकलना

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(ii) पूर्ण अकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ कर्म व पूरक शब्द दोनों की आवश्यकता न हो, वह पूर्ण अकर्मक क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- कोयल कूक रही हैं।
- बच्चा रो रहा हैं।
- तोता आसमान में उड़ता हैं।

नोट – पूर्ण अकर्मक क्रिया में क्या शब्द से प्रश्न किए जाने पर कोई भी काल्पनिक उत्तर नहीं निकलता हैं।

(ख) सकर्मक क्रिया

जहाँ क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया मे कर्म की आवश्यकता होती ही है, उसे सकर्मक क्रिया कहते है। सकर्मक क्रिया कर्म के बिना सम्पन्न हो ही नही सकती, जैसे –

1. राम पत्र लिखता है।
2. लडके ने बेर खाए।
3. मोहित पानी पीता है।
4. अध्यापक प्रश्न पूछते है।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'लिखना', 'खाना', 'पीना', 'पूछना' क्रियाओं का प्रभाव क्रमशः पत्र, बेर, पानी व प्रश्न कर्मपदों पर पड रहा है, क्योंकि इनके बिना क्रिया पूर्ण हो ही नहीं सकती, अतः ये सकर्मक क्रियाएँ है। सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले 'क्या', 'किसको' लगाकर प्रश्न पूछा जाता है और उसका कोई–न–कोई उत्तर अवश्य आता है और वह उत्तर ही कर्म होता है, और वह क्रिया सकर्मक होती है, राम क्या लिखता है? (पत्र), लडके ने क्या खाए? (बेर), मोहित ने क्या पिया? (पानी)।

(i) अपूर्ण सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ कर्म के अलावा भी किसी पूरक शब्द की आवश्यकता बनी रहती हैं, तो वहाँ अपूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

जैसे –

- हमने उसे सरपंच **बनाया**।
- मैं उसे बहन **मानता हूँ**।
- हम उसे ईमानदार **समझते हैं**।

पहचान – अपूर्ण सकर्मक क्रिया की श्रेणी में चयन (बनाना), चुनना, मानना, समझना आदि क्रियाएँ वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होती हैं।

(ii) पूर्ण सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ केवल कर्म की ही आवश्यकता पड़ती हैं, अन्य किसी पूरक शब्द की नहीं, वहाँ पूर्ण सकर्मक क्रिया होती हैं।

जैसे –

- बच्चा खेल रहा हैं। (क्रिकेट)
- तुमने जीता। (मैच)
- तुमने रोका। (रास्ता)

पहचान – वाक्य में प्रयुक्त किसी क्रिया वाचक शब्द से पहले **क्या** शब्द से प्रश्न करने पर यदि उसका कोई काल्पनिक उत्तर प्राप्त हो जाता हैं, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया पूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

पूर्ण सकर्मक क्रिया के पुनः दो उपभेद कर दिये जाते हैं।

(i) एक कर्मक क्रिया
(ii) द्वि कर्मक क्रिया

(i) एक कर्मक क्रिया

जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – 'माँ पढ़ रही हैं।' (यहाँ माँ के द्वारा एक ही कर्म पढ़ना हो रहा हैं।)

- उसने सेब व संतरे खरीदे।
- मैनें गाड़ी खरीदी।

] कर्म खरीदना

पहचान – यदि किसी वाक्य में केवल क्या प्रश्न का ही उत्तर प्राप्त हो रहा हो, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया एक कर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

(ii) द्वि कर्मक क्रिया

जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हो, उसे द्वि कर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – अध्यापक छात्रों को कम्प्यूटर सिखा रहे हैं।

क्या सिखा रहें हैं? – कम्प्यूटर, किसे सिखा रहे हैं? (छात्रों को) (छात्र सीख रहे हैं) इस प्रकार दो कर्म एक साथ घटित हो रहे हैं।

- सुमन अपनी बहन को हिंदी सिखाती हैं।
- अध्यापक ने छात्रों को हिंदी पढ़ाई।

पहचान – जब किसी वाक्य में किसे, क्या, किसको इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो रहें हो, तो वहाँ प्रयुक्त किया द्विकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

- द्विकर्मक क्रिया में प्रथम कर्म अप्राणीवाचक (निर्जीव) तथा द्वितीय कर्म प्राणीवाचक (सजीव) होगा।

क्रिया की पूर्णता के आधार पर भेद

अपूर्ण क्रिया –

कुछ क्रियाओं का अपने–आप में अर्थ पूर्ण ही नही होता, इसलिए अर्थ पूर्ण करने के लिए किसी अन्य 'पूरक' शब्द पर निर्भर होना होता है जो क्रिया न होकर संज्ञा या विशेषण पद होता है, ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण क्रिया कहते है, अर्थात् क्रिया अपना अर्थ स्वयं न देकर संज्ञा, विशेषण पद से ही दे पाती है, जैसे–

- अजीत श्याम को मूर्ख समझता है। ('मूर्ख'– विशेषण के बिना क्रिया 'समझता है' का अर्थ स्पष्ट नही होगा।)
- अशाोक जी हमारे गुरु थे। (गुरु–संज्ञापद के बिना 'थे' का अर्थ स्पष्ट नही होता।)

स्पष्ट है कि इन वाक्यों मे प्रयुक्त पूरक (मूर्ख, गुरु–दोनो संज्ञापद) का लोप कर देने से वाक्य मे पूर्णता नही आती। ऐसे पूरक कर्मपूरक कहे जाते है, जो विशेषण और संज्ञा दोनो ही हो सकते है।

पूर्ण क्रिया –

जिस क्रिया–पद से क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाए, पूरक के रूप मे गैर–क्रियापद (संज्ञा–विशेषण) की आवश्यकता नही हो, उसे पूर्ण क्रिया कहते है, जैसे–

1. लडका सोता है।
2. लडका पढता है।

यहाँ 'सोता है', 'पढता है' क्रियापद से पूर्ण अर्थ निकल जाता है। ये दोनो पद क्रियापद ही है। अतः ये पूर्ण क्रियाएँ है।

ध्यान देने योग्य बातें – हिंदी में निम्न **सोलह क्रियाएँ** ऐसी क्रियाएँ हैं, जिनके साथ दोनों कर्म प्रयुक्त किये जाते हैं। अतः इन्हें नित्य द्विकर्मक क्रिया माना जाता हैं।

1.	दुहना	2.	माँगना
3.	पकाना	4.	सजा देना
5.	रोकना	6.	पूँछना
7.	चुनना	8.	कहना
9.	उपदेश देना	10.	जीतना
11.	मथना	12.	चुराना
13.	ले जाना	14.	हरण करना
15.	खिंचना	16.	ढ़ोना

क्रिया की संरचना के आधार पर भेद

प्रेरणार्थक क्रिया

जहाँ कर्ता खुद क्रिया को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है, वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है। यहाँ कर्ता भी क्रिया तो करता है किन्तु वह प्रेरणा देने की क्रिया करता है। प्रेरणार्थक क्रियाओं मे 'वा' लगता है।

सरपंच ने गाँव में तालाब बनवाया।

नोट – इसमें सरपंच ने स्वयं कार्य नहीं किया, बल्कि अन्य लोगों को प्रेरित कर उनसे तालाब का निर्माण करवाया, अतः यहाँ प्रेरणार्थक किया हैं।

- नरेश ने नाई से बाल कटवाए।
- सुनीता ने अर्चना से पत्र लिखवाया।
- मोहन ने माली से दूब कटवाई।

सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती है।

मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया

मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने मे सहायता करने वाला क्रियापद सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे –

- मै गया हुआ था। (यहाँ गया मुख्य क्रिया है तथा हुआ था सहायक क्रिया है ।)
- सुरेश सुन रहा था। (सुन– मुख्य क्रिया है तथा रहा था– सहायक क्रियाएँ)

नामधातु क्रिया

जब संज्ञा एवं विशेषण अर्थात् नामपद शब्दों के अंत मे प्रत्यय जोडने पर किसी क्रिया का निर्माण होता है, तब वह नाम धातु क्रिया होती है। जैसे –

- सेठ ने मकान हथियाया। (हाथ–संज्ञापद)
- मुझ पर दृश्य फिल्माया। (फिल्म–संज्ञापद)
- लडकी बतियाई। (बात संज्ञापद)

हाथ (संज्ञा) – हथिया (नाम धातु) हथियाना (क्रिया)
अपना (सर्वनाम) – अपना (नाम धातु) अपनाना (क्रिया)
जैसे – रोहित, सुनीता के विवाह की जिम्मेदारी को अपना चुका हैं।

संज्ञा से निर्मित नामधातु

हाथ – हथियाना
लाज – लज्जाना
बात – बतियाना
लात – लतियाना
रंग – रंगना
शर्म – शर्माना

सर्वनाम से निर्मित नामधातु

अपना – अपनाना

विशेषण से निर्मित नामधातु

ठण्डा – ठण्डाना
साठ – सठियाना
गर्म – गर्माना

पूर्वकालिक क्रिया

जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर दूसरा कार्य आरम्भ करता है, तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। पूर्वकालिक क्रिया के अंत मे कर लगता है– सोकर, उठकर, जाकर आदि।

- बच्चे दूध पीकर सो गए।
  (सोने से पहले दूध पीया।)
- रमेश खाना खाकर विद्यालय गया।
- रमेश खाना खाने के बाद विद्यालय गया।

लेकिन 'रमेश ने खाना खाया और उसके बाद विद्यालय गया' वाक्य मे पहली क्रिया पूर्वकालिक नही है, बल्कि दोनो ही क्रियाएँ स्वतंत्र क्रियाएँ है क्योकि दोनों क्रियाएँ दो अलग–अलग उपवाक्यों की क्रियाएँ है।

तात्कालिक क्रिया

यह क्रिया भी मुख्य क्रिया से पहले सम्पन्न हो जाती है। इसमें और मुख्य क्रिया में समय का अंतर नही होता, किन्तु पहली क्रिया के घटने के तत्काल बाद दूसरी क्रिया के घटने का बोध होता है जो 'ही' निपात से संभव होता है।

- वह खाना खाते ही (तात्कालिक क्रिया) सो गया।
- वह नहाते ही (तात्कालिक क्रिया) मंदिर चला गया।

संयुक्त क्रिया

जब दो या दो से अधिक क्रिया–धातुओं के योग से क्रियापद बनता है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते है। संयुक्त क्रिया मे कई क्रियाओं के संयुक्त हो जाने से एक क्रिया का अर्थ निकलता है, जैसे –

- वह खाना खा चुका होगा।
- पानी बरसने लगा है।
- मै यहाँ रोज आ जाया करता हूँ।
- दोपहर में लोग सो रहे होते है।

इन सभी वाक्यों में पहला क्रियापद मुख्य क्रिया है तथा बाद के सभी क्रियापद सहायक क्रियाएँ है और मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रियाओं को मिलकर बने क्रियापद–समूह संयुक्त क्रियाएँ है। सहायक क्रिया एक भी हो सकती है। (पढता है) और एक से अधिक भी जैसा कि ऊपर के वाक्यों में है।

विशेष

(1) यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त कोई क्रिया स्वतः घटित हो रही हो तो वहाँ उस क्रिया को अकर्मक क्रिया माना जाता है –
जैसे – पेड से पत्ता गिर रहा है।
बूंद–बूंद से घडा भरता है।

(2) यदि किसी वाक्य में गत्यार्थक क्रिया का (आना, जाना, चलना) प्रयोग हो रहा है एवं उसके साथ वाक्य में आने/जाने/चलने का स्थानवाचक शब्द भी लिखा हो तो वहाँ इन क्रियाओं का सकर्मक माना जाता है।
जैसे – बच्चा घर गया।
वह स्कूल आ रही है।

काल के आधार पर क्रिया

जिस काल के अनुसार क्रिया सम्पन्न होती हैं, उसके अनुसार क्रिया के **तीन भेद** हैं।

1. भूतकालिक क्रिया
2. वर्तमान कालिक क्रिया
3. भविष्यत् कालिक क्रिया

1. **भूतकालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप जिससे बीते समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता हैं, भूतकालिक क्रिया कहलाती हैं।
जैसे –
   - वह विद्यालय चला गया।
   - उसने बहुत सुंदर गीत गाया।

2. **वर्तमान कालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप जिसमें वर्तमान समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता हैं, वर्तमान कालिक क्रिया कहलाती हैं।
जैसे –
   - अनुष्का अखबार पढ़ रही हैं।
   - अनिल हॉकी खेल रहा हैं।
   - सुमित खाना खा रहा हैं।

3. **भविष्यत् कालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा आने वाले समय में कार्य सम्पन्न होने का बोध होता हैं, उसे भविष्यत् कालिक क्रिया कहते हैं।
जैसे –
   - रेखा द्वितीय श्रेणी अध्यापक परीक्षा की तैयारी करेगी।
   - हरीश दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेगा।
   - कविता सर्दी की छुट्टियों में ननिहाल जाएगी।

अन्य क्रियाएँ

1. **सामान्य क्रिया** – जब किसी वाक्य में एक ही धातु से बनी हुई किसी अकेले क्रिया का प्रयोग हो रहा हो, तो वहाँ वह सामान्य क्रिया कहलाती हैं।
जैसे –
   - राकेश दिल्ली गया।
   - सुमन खाना बनाएगी।
   - रेखा ने गीत गाया।

2. **सजातीय क्रियाएँ** – जिस क्रिया के साथ उससे बनी हुई भाववाचक संज्ञा का कर्म के रूप में प्रयोग होता हैं, उसे सजातीय क्रिया कहते हैं।
अर्थात् – जब किसी वाक्य में कर्म एवं क्रिया पद दोनों एक ही धातु के बने होते हैं, वहाँ प्रयुक्त क्रिया सजातीय क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- राजू कई **खेल–खेलता हैं।**
- सीता मधुर **हँसी–हँसती** हैं।
- कृष्ण अच्छी **चाल–चलता** हैं।

3. अनुकरणात्मक क्रिया – किसी ध्वनि (आवाज/बोली) के अनुकरण पर जो क्रिया बनती हैं, उसे अनुकरणात्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे –

- बकरी की आवाज – में–में से मिमियाना
- तोते की आवाज – टें–टें से टिटियाना
- हवा की आवाज – सन–सन से सनसनाना

पक्षियों की आवाजें

कूकना (कू–कू)	–	कोयल
रँभाना	–	गाय
कुकडूँ–कुकडूँ	–	मुर्गा
डकारना	–	साँड
गुटरगूँ	–	कबूतर
खोखियाना	–	भालू
काँव–काँव	–	कौआ
हिनहिनाना	–	घोड़ा
भिन्न–भिन्नाना	–	मक्खी
भौंकना	–	कुत्ता
झंकरना (झीं–झीं)	–	झींगुर
दहाड़ना	–	शेर
गुनगुनाना	–	भंवरा
चिंघाड़ना	–	हाथी
भनभनाना	–	मच्छर
बलबलाना	–	ऊँट

क्रिया के संबंध में वाच्य

वाच्य – वाच्य क्रिया का रूपांतरण हैं, जिसके द्वारा यह पता चलता हैं कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता हैं।

वाच्य के भेद – वाच्य के **तीन भेद** होते हैं।

1. कर्तृवाच्य
2. कर्मवाच्य
3. भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य – जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध होता हैं, वह कर्तृवाच्य कहलाता हैं।

जैसे –

- राम ने खाना खाया।
- वह शहर गया।
- रमा हँसती हैं।

नोट – कर्तृवाच्य सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाओं से बनता हैं।

2. कर्मवाच्य – वह वाच्य जिसमें कर्म की प्रधानता का बोध हो, कर्मवाच्य कहलाता हैं।

जैसे –

- गाना गाया गया।
- पेड़ काटा गया।
- पुस्तक लिखी गई।

नोट – कर्मवाच्य सकर्मक क्रिया से बनता हैं।

3. भाववाच्य – जिस वाक्य में भाव या क्रिया की प्रधानता हो, वह भाववाच्य कहलाता हैं।

जैसे –

- सुरेश से चला नहीं जाता।
- मुझसे दौड़ा नहीं जाता।
- कमला से हँसा नहीं जाता।

नोट – भाववाच्य अकर्मक क्रिया से बनता हैं।

वाच्य के प्रयोग

वाक्य में क्रिया द्वारा कर्ता, कर्म, भाव का अनुसरण करने के कारण, वाच्य प्रयोग को **तीन भागों** में बाँटा गया हैं –

1. कर्तरि प्रयोग
2. कर्मणी प्रयोग
3. भावे प्रयोग

1. कर्तरि प्रयोग – जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हों, तब कर्तरि प्रयोग होता हैं।

जैसे –

- राम आम खाता हैं।
- श्याम अखबार पढ़ता हैं।

2. कर्मणी प्रयोग – जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हो, तब कर्मणी प्रयोग होता हैं।

जैसे –

- विमला ने किताब पढ़ी।
- मुकेश ने गीत गाया।
- लड़की द्वारा पत्र को पढ़ा गया।

3. भावे प्रयोग – जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार न होकर सदैव पुल्लिंग, एकवचन, अन्य पुरुष में हो, तब भावे प्रयोग होता हैं।

जैसे –

- कमल से दौड़ा नहीं जाता।
- सोनू से हँसा नहीं जाता।
- मुझसे रोया नहीं जाता।
- पक्षियों से उड़ा नहीं जाता।

क्रिया की वृत्ति

वृत्ति का शाब्दिक अर्थ – मनःस्थिति या मूड

क्रिया के जिस रूप द्वारा लेखक या वक्ता के उद्देश्य/मंतव्य, मनःस्थिति का पता चलता हैं, वह क्रिया वृत्ति कहलाता हैं।

वृत्ति के भेद – (7)

(i) संदेहार्थक वृत्ति – क्रिया के जिस रूप से लेखक के मन में उत्पन्न होने वाले संदेह/शंका का भाव प्रकट होता हैं, तो वह संदेहार्थक वृत्ति कहलाती हैं।

जैसे –

- संतोष गाँव पहुँच गई होगी।
- भावेश पत्र लिख रहा होगा।
- रमेश ने खाना खा लिया होगा।

(ii) संभावनार्थक वृत्ति – जिस वृत्ति से किसी क्रिया के भविष्य में हो सकने के बारे में पता चलता हैं, उसे संभावनार्थक वृत्ति कहते हैं।

जैसे –

- आप अच्छे वक्ता बन सकते हों।
- शायद कल बारिश आए।
- भारत–पाकिस्तान के बीच होने वाला क्रिकेट मैच रुक सकता हैं।
- पिताजी शाम को यहाँ आ सकते हैं।

(iii) आज्ञार्थक वृत्ति – यदि किसी वाक्य में आज्ञा/आदेश, अनुरोध, निषेध, चेतावनी, प्रार्थना आदि का बोध हो, वह आज्ञार्थक वृत्ति कहलाता हैं।

जैसे –

- अजय तुम यहाँ से चले जाओ। (आज्ञा)
- रेखा इधर आओ। (आदेश)
- मेरा काम जरूर कर दीजिएगा। (अनुरोध)
- आप मुझे अपनी पुस्तक दे सकेंगे। (निवेदन)
- तुम जल्दी चले जाना नहीं तो गाड़ी निकल जाएगी। (चेतावनी)

(iv) संकेतार्थक वृत्ति – यदि किसी वाक्य में संकेत के भाव प्रकट हो, तो वहाँ संकेतार्थक वृत्ति होगी।

जैसे –

- बारिश होगी तो हम भी पिकनिक पर चलेंगे।
- यदि तुम पढ़ते तो पास हो जाते।
- छुट्टी होती तो हम गाँव चले जाते।

(v) निश्चयार्थक वृत्ति – निश्चयार्थ वृत्ति में वक्ता की निश्चित भाव की मानसिक अभिवृत्ति का पता चलता हैं।

जैसे –

- मेरे पिताजी बहुत मेहनती हैं।
- उसने अपना कार्य कर लिया हैं।
- अब गाड़ी जा चुकी हैं।
- सोहन अच्छा वक्ता हैं।

(vi) इच्छार्थक वृत्ति – इस वृत्ति में वक्ता की इच्छा, वरदान, अभिशाप आदि का पता चलता हैं।

जैसे –

- आपकी यात्रा मंगलमय हो।
- बेटे जल्दी ही तुम्हारी नौकरी लग जाए।
- भगवान तुम्हें नरक में डाले।
- भगवान सबका भला करे।

(vii) प्रश्नार्थक वृत्ति – जब वक्ता के मन में जिज्ञासा हो और वह उसको शांत करने के लिए प्रश्न करें तो वह प्रश्नार्थक वृत्ति कहलाती हैं।

जैसे –

- यह किताब कितने दिन में बन जायेगी।
- अब मुझे किस परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए।
- आपका जन्मदिन कब हैं?
- आपका नाम क्या हैं?

क्रिया के पक्ष

पक्ष – कोई कार्य किसी कालावधि के बीच होता हैं, जो आरंभ से लेकर अन्त तक फैला हुआ होता हैं। इस क्रिया में क्रिया के घटित होने के विभिन्न पहलुओं, प्रतिक्रियाओं को देखना पक्ष कहलाता हैं।

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के होने की प्रक्रियागत अवस्था का बोध होता हैं, वह पक्ष कहलाता हैं।

पक्ष के भेद – पक्ष के मुख्यत 6 भेद होते हैं।

पक्ष के भेद

- आरम्भ बोधक पक्ष
- प्रगति बोधक पक्ष
- सातत्य बोधक पक्ष
- पूर्णता बोधक पक्ष
- नित्यता बोधक पक्ष
- आवृत्ति बोधक पक्ष

1. **आरम्भ बोधक पक्ष** – क्रिया का वह रूप जिससे किसी कार्य के आरम्भ होनें का बोध हों, वह आरम्भबोधक पक्ष कहलाता हैं।
   जैसे –
   - अतुल स्कूल जाने लगा हैं।
   - आजकल अवनी भी पढ़ने लगी हैं।
   - नवीन बोलने लगा हैं।
   - साक्षी पुस्तक पढ़ने लगी हैं।

2. **प्रगति बोधक पक्ष** – यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त क्रिया में बढ़ोतरी या वृद्धि होने का भाव प्रकट हो तो वहाँ प्रगति बोधक पक्ष माना जाता हैं।
   जैसे –
   - रीतिका पुस्तक पढ़ती ही जा रही थी।
   - मेलें में भीड़ बढ़ती ही जा रही थी।
   - वर्षा होती ही जा रही थी।

3. **सातत्य बोधक पक्ष** – क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के निरंतर रूप से चलते रहने का संकेत मिलता हैं। यह निरंतरता वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत् काल किसी में हो सकती हैं।
   जैसे –
   - शिक्षक कक्षा में पढ़ा रहे थे।
   - श्याम पुस्तक पढ़ रहा हैं।
   - मानसी लिख रही हैं।

4. **पूर्णता बोधक पक्ष** – क्रिया के जिस रूप द्वारा कार्य के पूर्ण हो जाने का बोध हो, वहाँ पूर्णता बोधक पक्ष माना हैं।
   जैसे –
   - स्नेहा स्नान कर चुकी हैं।
   - गाड़ी जा चुकी हैं।
   - निराला ने पुस्तक पढ़ ली हैं।

5. **नित्यता बोधक पक्ष** – क्रिया के जिस रूप द्वारा किसी कार्य के नित्य होने का बोध होता हैं, वहाँ नित्यता बोधक पक्ष माना जाता हैं। क्रिया पहले भी होती थी, अभी भी होती हैं और आगे भी होती रहेगा। **नित्यता बोधक पक्ष को अपूर्णता बोधक पक्ष भी कहा जाता हैं।**
   जैसे –
   - मेरे पिताजी किसान हैं।
   - सूर्य पूर्व दिशा से उदय होता हैं।
   - सूर्यास्त के समय आसमान में लालिमा छा जाती हैं।

6. **आवृत्ति बोधक पक्ष** – जब किसी वाक्य में एक ही कार्य के बार–बार घटित होनें का बोध होता हैं तो वहाँ आवृत्ति बोधक पक्ष माना जाता हैं।
   जैसे –
   - डाकिया पत्रों का वितरण करता हैं।
   - आरती स्कूल जाती हैं। (रोजाना)
   - होली पर सब लोग घरों की सफाई करते हैं। (हर बार)

   नोट – आवृत्ति बोधक पक्ष को अभ्यास बोधक पक्ष भी कहा जाता हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

6 CHAPTER लिंग

लिंग शब्द का अर्थ होता है- चिह्न या पहचान।
लिंग से तात्पर्य भाषा के ऐसे प्रावधानों से है जो वाक्य के कर्ता के स्त्री, पुरुष, निर्जीव होने के अनुसार बदल जाते है। विश्व की लगभग एक चौथाई भाषाओं में किसी न किसी प्रकार की लिंग व्यवस्था है ।

हिन्दी में दो लिंग होते है पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग, जबकि संस्कृत में तीन लिंग होते है- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसक लिंग । फारसी जैसे भाषाओं में लिंग नहीं होता, और अंग्रेजी में भी लिंग सिर्फ सर्वनाम में होता है।

उदाहरण

- मोहन पढता है- पढता का रूप पुल्लिंग है, इसका स्त्रीलिंग रूप 'पढती' है ।
- गीता गाती है- यहाँ, 'गाती' का रूप स्त्रीलिंग है ।

लिंग के भेद

संसार में तीन जातियाँ होती है - पुरुष, स्त्री, जड । इन्ही जातियों के आधार पर लिंग के भेद बनाए गये हैं ।

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग
3. नपुंसकलिंग

पुल्लिंग

जिन संज्ञा के शब्दों से पुरुष जाति का पता चलता है उसे पुल्लिंग कहते हैं ।
जैसे :- पिता, राजा, घोडा, कुत्ता, बंदर, हंस, बकरा, लड़का, आदमी, सेठ, मकान, लोहा, चश्मा, दुःख, प्रेम, लगाव, खटमल, फूल, नाटक, पर्वत, पेड, मुर्गा, बैल, भाई, शिव, हनुमान, शेर आदि।

पुल्लिंग अपवाद
पक्षी, फरवरी, एवरेस्ट, मोतिया, दिल्ली, स्त्रीत्व आदि ।

पुल्लिंग की पहचान

1. जिन शब्दों के पीछे अ, त्व, आ, आव, पा, पन, न आदि प्रत्यय आये वे पुल्लिंग होते हैं जैसे :- मन, तन, वन, शेर, राम, कृष्ण, सतीत्व, देवत्व, मोटापा, चढाव, बुढापा, लडकपन, बचपन, लेन-देन आदि ।
2. पर्वतों के नाम पुल्लिंग हाते हैं ।
   जैसे :- हिमालय, हिमाचल, विंध्याचल, सतपुडा, आल्पस, यूराल, कंचनजंगा, फ्यूजियामा, कैलाश, मलयाचल, माउण्ट एवरेस्ट आदि ।
3. दिनों के नाम पुल्लिंग होते है । जैसे :- सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार आदि ।
4. देशों के नाम पुल्लिंग होते है । जैसे :- भारत, चीन, ईरान, यूनान, रूस, जापान, अमेरिका, पाकिस्तान, उत्तरप्रदेश, हिमाचल, मध्यप्रदेश आदि ।
5. धातुओं के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- सोना, ताँबा, पीतल, लोहा, चाँदी, पारा आदि ।
6. नक्षत्रों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- सूर्य, चन्द्र, राहू, आकाश, शनि, बुध, बृहस्पति, मंगल, शुक्र आदि ।
7. महीनों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- फरवरी, मार्च, चैत्र, आषाढ, फाल्गुन आदि ।
8. द्रवों के नाम पुल्लिंग होते हैं ।
   जैसे :- पानी, तेल, पेट्रोल, घी, शरबत, दही, दूध आदि ।
9. पेडों के नाम पुल्लिंग होते हैं ।
   जैसे :- केला, पपीता, शीशम, सागौन, जामुन, बरगद, पीपल, नीम, आम, अमरूद, देवदार, अनार, अशोक, पलाश आदि।
10. सागर के नाम पुल्लिंग हाते है । जैसे :- हिन्द महासागर, प्रशांत महासागर, अरब महासागरआदि ।
11. समय के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- घंटा, पल, क्षण, मिनट, सेकंड आदि
12. अनाजों के नाम भी पुल्लिंग हाते हैं । जैसे :- गेहूँ, बाजरा, चना, जौ आदि ।
13. वर्णमाला के अक्षरों के नाम पुल्लिंग होते है । जैसे :- अ, उ, ए, ओ, क, ख, ग, घ, च, छ, य, र, ल, व श आदि ।
14. प्राणीवाचक शब्द हमेशा पुरुष जाति का ही बोध कराते है । जैसे :- बालक, गीदड, कौआ, कवि, साधु, खटमल, भेडिया, खरगोश, चीता, मच्छर, पक्षी आदि।
15. समूह वाचक संज्ञा भी पुल्लिंग होती है । जैसे :- मण्डल, समाज, दल, समूह, सभा, वर्ग, पंचायत आदि।
16. भारी और बेडौल वस्तु भी पुल्लिंग होती है। जैसे :- जूता, रस्सा, पहाड, लोटा आदि।
17. रत्नों के नाम भी पुल्लिंग होते हैं। जैसे :- नीलम, पुखराज, मूँगा, माणिक्य, पन्ना, मोती, हीरा आदि।
18. फूलों के नाम पुल्लिंग होते हैं।
   जैसे :- गेंदा, कमल, गुलाब आदि।
19. द्वीप भी पुल्लिंग होते हैं। जैसे :- अंडमान-निकोबार जावा, क्यूबा, न्यू फाउंलैंड आदि।
20. शरीर के अंग पुल्लिंग होते हैं। जैसे :- हाथ, पैर, गला, अंगूठा, कान, सिर मुँह, घुटना, हृदय, दांत, मस्तक आदि।
21. दान, खाना, वाला से खत्म होने वाले शब्द हमेशा पुल्लिंग होते है। जैसे :- खानदान, पीकदान, दवाखाना, जेलखाना, दूधवाला, दुकान वाले आदि।
22. आकारान्त संज्ञा पुल्लिंग होती है।
   जैसे::- गुस्सा, चश्मा, पैसा, छाता आदि ।

स्त्रीलिंग

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का पता चलता है उसे स्त्रीलिंग कहते है

जैसे :- हंसिनी, लड़की, बकरी, माता, रानी, जूं, सुंई गर्दन, लज्जा, घोडी, कुतिया, बंदरिया, कुर्सी, पत्ती, नदी, शाखा, मुर्गी, गाय, बहन, यमुना, बुआ, लक्ष्मी, गंगा, औरत, शेरनी, नारी, झोंपडी, लोमडी आदि ।

स्त्रीलिंग के अपवाद

जैसे :- जनवरी, मई, जुलाई, पृथ्वी, मक्खी, ज्वार, अरहर, मूँग, चाय, कॉफी, लस्सी, चटनी, इ, ई, ऋ, जीभ, आँख, नाक, उँगलियाँ, सभा, कक्षा, संतान, प्रथम, तिथि, छाया, खटास, मिठास, आदि ।

स्त्रीलिंग प्रत्यय

जब पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग बनाया जाता है तब प्रत्ययों को शब्दों में जोड़ा जाता है जिन्हें स्त्रीलिंग प्रत्यय कहते हैं ।

जैसे :- ई = बडा- बडी, भला - भली आदि ।

इनी = योगी-योगिनी, कमल- कमलिनी आदि ।

इन = धोबी - धोबिन, तेल-तेली आदि ।

नि = मोर - मोरनी, चोर-चोरनी आदि ।

आनी = जेठ - जेठानी, देवर - देवरानी आदि ।

आइन = ठाकुर - ठकुराइन, पंडित - पण्डिताइन आदि ।

इया = बेटा - बिटिया, लोटा - लुटिया आदि ।

स्त्रीलिंग की पहचान

1. जिन संज्ञा शब्दों के पीछे ख, ट, वट, हट, आनी आदि आयें वे सभी स्त्रीलिंग होते हैं
   जैसे :- कडवाहट, आहट, बनावट, शत्रुता, मूर्खता, मिठाई, छाया, ईख, भूख, चोख, राख, कोख, लाख, देखरेख झंझट, आहट, चिकनाहट सजावट, इन्द्राणी, जेठानी, ठकुरानी, राजस्थानी आदि ।
2. अनुस्वारांत, ईकारांत, ऊकारांत, तकारांत, सकारांत आदि संज्ञाएँ आती है वे स्त्रीलिंग होती है। जैसे :- रोटी, टोपी, नदी, चिट्ठी, उदासी, रात, बात, छत, भीत, लू, बालू, दारू, सरसों, खडाऊं, प्यास, वास, साँस, नानी, बेटी, मामी, भाभी आदि
3. भाषा, बोलियों तथा लिपियों के नाम स्त्रीलिंग होते है ।
   जैसे : - हिंदी, संस्कृत, देवनागरी, पहाडी, अंग्रेजी, पंजाबी गुरुमुखी, फ्रांसीसी, अरबी, फारसी, जर्मन, बंगाली रूसी आदि ।
4. नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते है :- जैसे :- गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, रावी, कावेरी, कृष्णा, व्यास, सतलज, झेलम, ताप्ती, नर्मदा आदि ।
5. तरीखो और तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते है ।
   जैसे:- पहली, दूसरी, प्रतिपदा, पूर्णिमा, पृथ्वी, अमावस्या, एकादशी, चतुर्थी, प्रथमा आदि ।
6. नक्षत्रो के नाम स्त्रीलिंग होते है। जैसे :- अश्विनी, भरणी, रोहिणी, खे ती, मृगशिरा, चित्रा आदि ।
7. हमेशा स्त्रीलिंग रहने वाली संज्ञा होती है । जैसे :- मक्खी, कोयल, मछली, तितली, मैना आदि ।
8. समूहवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- भीड, कमेटी, सेना, सभा, कक्षा आदि ।
   प्राणीवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- धाय, संतान, सौतन आदि ।
9. पुस्तकों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।
   जैसे :- कुरान, रामायण, गीता, रामचरितमानस, बाइबल, महाभारत आदि ।
10. आहारो के नाम स्त्रीलिंग होते है ।
    जैसे :- सब्जी, दाल, कचौरी, पूरी, रोटी, पकोडी आदि ।
11. शरीर के अंगों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं जैसे :- आँख, नाक, जीभ, पलक, उँगली, ठोडी आदि ।
12. अभुषण और वस्त्रों के नाम स्त्रीलिंग होते है । जैसे :- साडी, सलवार, चुन्नी, धोती, टोपी, पेंट, कमीज, पगडी माला, चूडी, बिंदी, कंघी, नथ, अंगूठी आदि ।
13. मसालों के नाम भी स्त्रीलिंग होते हैं ।
    जैसे :- दालचीनी लौंग, हल्दी, मिर्च, धनिया, इलायची, अजवाइन, सौंफ, चाय आदि ।
14. राशि के नाम स्त्रीलिंग होते हैं । जैसे :- कुम्भ, मीन, तुला, सिंह, मेष, कर्क आदि ।

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में प्रयुक्त होने वाले शब्द इस प्रकार है

प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राष्ट्रप्रति, उपराष्ट्रपति, चित्रकार, पत्रकार गवर्नर, वकील, डॉक्टर, सेक्रेटरी प्रोफेसर, शिशु दोस्त, बर्फ, मेहमान, मित्र, ग्राहक, प्रिंसिपल, मैनेजर, मंत्री आदि ।

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम इस प्रकार है

1. अ, आ पुल्लिंग शब्दों को जब 'ई' कर दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग हो जाते है। पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है :-
   - गूँगा - गूँगी
   - गधा - गधी
   - देव - देवी
   - नर - नारी
   - नाला - नाली
   - लड़का - लड़की
   - पुंत्र - पुत्री
   - दास - दासी
   - बेटा - बेटी
2. जब अ, आ, वा आदि पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में बदला जाता है तो अ, आ, तथा वा की जगह पर इया लगा दिया जाता है। पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार है :-
   - लोटा = लुटिया
   - बन्दर = बंदरिया
   - बूढा = बुढिया
   - बेटा = बिटिया
   - चिडा = चिडिया

3. जब 'अक' जैसे तत्सम शब्दों में 'इका' जोडकर भी स्त्रीलिंग बनाए जाते है ।
   तत्सम शब्द + इका = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार है ।
   - अध्यापक + इका = अध्यापिका
   - पत्र + इका = पत्रिका
   - चालक + इका = चालिका
   - सेवक + इका = सेविका
   - लेखक + इका = लेखिका
   - गायक + इका = गायिका
   - पाठक + इका = पाठिका
   - संपादक + इका = संपादिका
4. जब पुल्लिंग को स्त्रीलिंग बनाया जाता है तो कभी-कभी नर या मादा लगाना पडता है ।
   पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है :-
   - तोता = मादा तोता
   - खरगोश = मादा खरगोश
   - मच्छर = मादा मच्छर
   - जिराफ = मादा जिराफ
   - खटमल = मादा खटमल
   - मगरमच्छ = मादा मगरमच्छ
   - उल्लू = मादा उल्लू
   - कोयल = नर कोयल
   - चील - नर चील
   - मकड़ी = नर मकडी
   - भेड = नर भेड
   - मक्खी = नर मक्खी
   - गिलहरी = नर गिलहरी
   - मैना = नर मैना
   - कछुआ = नर कछुआ
   - भालू = मादा भालू
   - भेडिया = मादा भेडिया
5. कुछ शब्द स्वतंत्र रूप से स्त्री-पुरुष के स्वयं में ही जोडे होते हैं । कुछ पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग बिल्कुल उल्टे होते हैं ।
   पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार है-
   - राजा = रानी
   - सम्राट = सम्राज्ञी
   - पिता = माता
   - भाई = बहन
   - वर = वधू
   - पति = पत्नी
   - मर्द = औरत
   - पुरुष = स्त्री
   - बैल = गाय
   - पुत्र = पुत्री
   - फूफा = बुआ
6. कुछ शब्दों का स्त्रीलिंग न हो पाने की वजह से उनमें 'आनी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है ।
   पुल्लिंग + आनी = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है-
   - सेठ + आनी = सेठानी
   - देवर + आनी = देवरानी
   - नौकर + आनी = नौकरानी
   - इंद्र + आनी = इन्द्राणी
   - जेठ + आनी = जेठानी
   - मेहतर + आनी = मेहतरानी
7. कभी-कभी पुल्लिंग के कुछ शब्दों में इन जोडकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है । पुल्लिंग + 'इन' = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार हैं -
   - साँप + इन = सॉपिन
   - सुनार + इन = सुनारिन
   - नाती + इन = नातिन
   - दर्जी + इन = दर्जिन
   - कुम्हार + इन = कुम्हारिन
   - लुहार + इन = लुहारिन
   - माली + इन = मालिन
   - धोबी + इन = धोबिन
   - बाघ + इन = बाघिन
8. कभी-कभी बहुत से शब्दों में 'आइन' जोड़कर स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं। पुल्लिंग + आइन = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है :-
   - चौधरी + आइन = चौधराइन
   - हलवाई + आइन = हलवाइन
   - पंडित + आइन = पण्डिताइन
   - ठाकुर + आइन = ठकुराइन
   - बाबू + आइन = बबुआइन
9. जब पुल्लिंग शब्दों में ता की जगह पर 'त्री' लगा दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग बन जाते है । पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है
   - नेता = नेत्री
   - दाता = दात्री
   - अभिनेता = अभिनेत्री
   - रचयिता = रचयित्री
   - विधाता = विधात्री
   - वक्ता = वक्त्री
   - धाता = धात्री
10. जब पुल्लिंग के जाति और भाव बताने वाले शब्दों में 'नी' लगा दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग में बदल जाते हैं । पुल्लिंग शब्द + नी = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है ।
    - सियार + नी = सियारनी
    - हिन्दू + नी = हिन्दुनी
    - ऊँट + नी = ऊँटनी

7 CHAPTER कारक एवं विभक्ति

कारक

- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ प्रकाशित हो सकता है, उसी रूप को कारक कहते हैं।
- हिन्दी में कारक मुख्य रूप से 8 प्रकार के होते हैं।
- कारकों का विभक्ति सहित परिचय निम्न है–

	कारक	विभक्ति चिह्न	वाक्य प्रयोग
1.	कर्ता	ने	राजू ने पत्र लिखा। राजू पत्र लिखता है।
2.	कर्म	को	राम पुस्तक पढ़ता है। राम ने रावण को मारा।
3.	करण	से, के द्वारा	श्याम ने कलम से पत्र लिखा। श्याम के द्वारा कलम से पत्र लिखा गया।
4.	संप्रदान	को, के लिए	राज को पुस्तक दे दो। सरला के लिए सामान मँगवाओं।
5.	अपादान	से (पृथकता)	पेड़ से पत्ता गिरा। घोड़े पर से राज गिरा।
6.	संबंध	का, के, की, रा, रे, री	यह पुस्तक राम की है। मेरी पुस्तक है। मेरे पिताजी है।
7.	अधिकरण	में, पर	छत पर मत जाओ। नदी में तैरो।
8.	संबोधन	हे! अरे! ओ	हे राम! हम पर कृपा करो। ओ मूर्ख! ठहर जाओ।

1. कर्ता कारक

कर्ता का अर्थ करने वाला होता है। वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने का बोध होता है, उसे कर्ता कहते हैं।

उदाहरण – बच्चे खेलते हैं।
राज जयपुर जाता हैं।
मानसी नृत्य करती है।
पूजा ने चित्र देखे।

नोट –

- कर्ता कारक प्रायः कभी–कभी विभक्ति रहित होते हैं व कभी विभक्ति सहित होते हैं। जब कर्ता विभक्ति रहित हो तब 'कौन' लगाकर प्रश्न करें – जो पद उत्तर में होगा वो ही कर्ता होगा।
  जैसे –
  छात्र पुस्तक पढ़ते हैं – कौन पढ़ते हैं – छात्र।
- कभी–कभी कर्ता के साथ 'ने' चिह्न ना आकार कर्ता संज्ञा या सर्वनाम के साथ अन्य चिह्न भी आते हैं।
  जैसे – 'को'
  राज को कल क्रिकेट खेलना हैं।
- कभी–कभी कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' इत्यादि करण कारक के विभक्ति चिह्न जुड़ें होने पर भी कर्मवाच्य व भाववाच्य पदों में कर्ता कारक माना जाएगा।
  (i) दादाजी से चला नहीं जाता है। (भाववाच्य)
  (ii) राम के द्वारा लिखा जाता है।
- कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में नकारात्मक वाक्यों के साथ 'से' का प्रयोग होता है व सकारात्मक वाक्यों के साथ 'के द्वारा' का प्रयोग होता है।
  जैसे – राज के द्वारा क्रिकेट खेला गया।
  विमला से पुस्तक नहीं पढ़ी गई।

2. कर्म कारक

कर्ता जहाँ पर सर्वाधिक जोर देता है या सर्वाधिक चाहता है, उसे कर्मकारक कहते हैं अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप पर क्रिया का फल पड़े, उसे कर्म कारक कहते हैं।

उदाहरण –
(i) राम ने रावण को मारा।
(ii) राधा पुस्तक पढ़ती है।
(iii) भारत की क्रिकेट टीम ने पाकिस्तान क्रिकेट टीम को रौंद डाला।

नोट –

- कर्मकारक भी विभक्ति सहित व रहित दोनों रूपों में प्रयुक्त होता है।
- कर्म जब 'प्राणीवाचक' हो तब 'को' जुड़ेगा व कर्म 'अप्राणीवाचक' हुआ तो 'को' का प्रयोग नहीं होता हैं।
  जैसे – राज अतुल को पढ़ाता है।
  मोर नाच दिखाता है।
- दोनों ओर, चारों ओर, की ओर जहाँ होते है वहाँ पर कर्म कारक होता हैं।
  जैसे – विद्यालय के दोनों ओर पेड़ हैं।
  मैदान के चारों ओर बच्चे दौड़ रहे थे।
  राधा मन्दिर की ओर जा रही थी।
- निकट, पास, दूर, वार, तिथि व समय प्रकट करने वाले शब्दों में कर्मकारक होता हैं।
  जैसे – विद्यालय के पास मन्दिर है।
  तुम मंगलवार को आगरा चले जाना।

3. करण कारक

वाक्य में जिस साधन के माध्यम से क्रिया का व्यापार सम्पादन हो उसे कर्म कारक कहते हैं।

उदाहरण –

- मैं आपको आँखों देखी घटना बता रहा हूँ।
- छात्रों को पत्र से परीक्षा की सूचना मिली।
- आज भी संसार में लाखों पशु अकाल से मर रहे हैं।
- कानों सुनी बात हमेशा सत्य होती है।

विशेष

(i) जहाँ पर समानता का भाव प्रकट हो वहाँ करण कारक होता है।
उदाहरण – राज के समान अतुल भी मूर्ख है।

(ii) जिस चिह्न से किसी व्यक्ति या वस्तु की पहचान हो वहाँ करण कारक होता है।
उदाहरण –
वह काले कोट से वकील लगता है।
वह कमण्डलु से साधु प्रतीत होता है।

(iii) जिसके साथ में हो, उस शब्द में करण कारक होता है।
उदाहरण –
राज के साथ श्याम विद्यालय गया था।
सीता राम के साथ वन गई।

4. सम्प्रदान कारक

जिस प्राणी या वस्तु के हित के लिए क्रिया व्यापार का सम्पादन किया जाता है उसे सम्प्रदान कारक कहा जाता है।

उदाहरण –

- क्रिकेटर महेन्द्र सिंह धोनी ने गरीब लोगों के लिए अनाज और कपड़ें बँटवाए।
- राजा ने भिखारी को वस्त्र दिए।
- राम के हित लक्ष्मण भी वन गए थे।

विशेष

- जहाँ पर वस्तु पूर्ण रूप से दे दी गई हो वहाँ सम्प्रदान कारक होता है बल्कि वस्तु को पुनः लेने का भाव हो वहाँ पर कर्म कारक होता है।
  जैसे – अनिल ने धोबी को वस्त्र दिए।
- जहाँ पर कोई रूची का भाव प्रकट हो वहाँ पर सम्प्रदान कारक होता है।
  जैसे – राम को खीर अच्छी लगती है।
- जहाँ अभिवादन, कल्याण, कामना, कहना या निवेदन करने के योग में सम्प्रदान कारक होता है।
  जैसे – छात्रों का कल्याण हो।
  राम अपने पिताजी से निवेदन कर रहा था।
  बड़ों को नमस्कार।

5. अपादान कारक

अपादान अलग होने का भाव प्रकट करता है अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने का भाव प्रकट हो उसे अपादान कारक कहते हैं।

उदाहरण –

- राज घोड़े से गिर गया।
- गंगा हिमालय से निकलती है।
- किसान फसल से पशुओं को हटाता है।

विशेष

प्रेम, घृणा, लज्जा, ईर्ष्या, भय, तुलना, सीखने के अर्थ में भी अपादान कारक होता हैं।

जैसे –

- राज को गंदगी से घृणा है।
- हिरण शेर से बहुत डरता है।
- राजू अपने पिताजी से बहुत लजाता है।
- छात्र अध्यापक से शिक्षा लेते हैं।
- सरोज गाड़ी से जयपुर गयी। (करण)
- सरोज गाड़ी से गिर गयी। (अपादान)
- वह विद्यालय से आया। (अपादान)
- वह जीप से आया। (करण)

6. संबंध कारक

वाक्य के जिस पद से किसी वस्तु व्यक्ति या पदार्थ का दूसरे व्यक्ति वस्तु या पदार्थ से संबंध प्रकट हो उसे संबंध कारक कहते है।

उदाहरण –

- राजकुमार मदन का पुत्र है।
- यह राधा की पुस्तक है।
- लड़कें के कपड़े कहाँ पर हैं ?

विशेष

- संबंध कारक के परसर्ग में, रा, रे, री, का, के, ना, ने, अवस्था, निश्चय, लक्षण, शीघ्रता, लोकोक्तियों में समय, मूल्य, परिणाम आदि में संबंध कारक का प्रयोग किया जाता हैं।

उदाहरण –

- दस रुपये की थाली।
- राजा का रंक।
- आज भी दूध का दूध और पानी का पानी होता हैं।
- सब के सब चले गये रह गये बस आप।
- राई का पहाड़।
- मेरी पुस्तक कहाँ है ?
- मोहन के कपड़े कहाँ हैं ?
- यह कृष्ण का घर है।

7. अधिकरण कारक

क्रिया होने के स्थान और काल को बताने वाला कारक अधिकरण कारक कहलाता है अर्थात् वाक्य में क्रिया का आधार आश्रय, समय या शर्त का कार्य करने वाला संज्ञा पद अधिकरण कारक कहलाता हैं।

अधिकरण कारक की विभक्तियाँ

के ऊपर, में, पर, अंदर, के बीच, के मध्य, के भीतर आदि।

उदाहरण –

- मोर छत पर नाच रहा है।
- राम पेड़ पर बैठा है।
- माऊण्ट आबू पर चढ़ना आसान नहीं है।
- वह द्वार – द्वार भीख माँगता फिरता है।
- माता पुत्री से स्नेह करती है।

विशेष

जहाँ किसी को बहुतों में अच्छा या बुरा बतलाया जाए या जिससे तुलना की जाए, समयावधि सूचित करने में अधिकरण कारक होता हैं।

उदाहरण –

- छात्रों में मुकेश समझदार है।
- अशोक ने पाँच दिनों में सारा काम कर लिया।
- अशोक आज तुम्हारे घर सोना बरसेगा।

8. सम्बोधन कारक

- जिस संज्ञा पद से किसी को पुकारने, सावधान करने अथवा सम्बोधित करने का बोध हो सम्बोधन कारक कहलाता है।
- सम्बोधन प्रायः कर्ता का ही होता है –
  हे भगवान! अब क्या होगा।
  बच्चो! घर जाओ।
  अरे राज! तु वहाँ क्या कर रहा है।
  ओ अतुल! जरा इधर तो आना।

विशेष

- सर्वनाम शब्दों में कभी सम्बोधन नहीं होता है। कई बार नाम पर जोर देकर सम्बोधन का काम चला लिया जाता है।

जैसे – अशोक जल्दी चलो।

- कभी–कभी सम्बोधन शब्द संज्ञा के साथ नहीं आते हैं जबकि अकेले ही प्रयुक्त होते हैं।
  जैसे – अरे, इधर आओ।
- संज्ञा शब्दों के पूर्व कभी–कभी अव्यय शब्दों का भी प्रयोग होता हैं।
- सम्बोधन कारक के चिह्न सम्बोधन संज्ञा से पूर्व आते हैं–
  संबोधित ईकारान्त, ऊकारान्त संज्ञा, संबोधन के समय ह्रस्व हो जाती हैं।
  हे पृथ्वी! हे नदी! अभि सुंदरी!
  हे स्वामी! हे दामिनी! हे वधू!
  हे सीते! इत्यादि

विभक्ति

- वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम को कर्ता, कर्म, करण आदि में विभक्त करने वाले शब्द चिह्न जो कारकों का रूप प्रकट करने के लिए कारकों के साथ लगते हैं विभक्ति कहलाती हैं।
- विभक्ति दो प्रकार की होती है–
  1. संश्लिष्ट विभक्ति
  2. विश्लिष्ट विभक्ति

संश्लिष्ट विभक्ति

जो विभक्तियाँ सर्वनाम शब्दों के साथ उनकी शिरोरेखा से मिलाकर लिखी जाती है उसे संश्लिष्ट विभक्ति कहते हैं। जैसे – आपका, आपने, मैंनें, मुझको, उसका, उसमें, इसमें, इसने, उसको आदि।

विश्लिष्ट विभक्ति

ऐसी विभक्तियाँ जो संज्ञा नाम से अलग लिखी जाती हैं उन्हें विश्लिष्ट विभक्ति कहते हैं–
दीपक ने, महेश को, देवेन्द्र से, प्रमोद के लिए, राधा को कृष्ण से, सेना में, छत पर, मोहन ने।

कारक	विभक्ति	वाक्य प्रयोग
कर्ता	ने	देव ने पत्र लिखा।
कर्म	को	देव पुस्तक पढ़ता है।
करण	से, के द्वारा	राज ने कलम से पत्र लिखा।
संप्रदान	को, के लिए	भिखारी को आटा दे दो।
अपादान	से, (पृथकता)	पेड़ से पत्ता गिरा।
संबंध	का, के, की, रा, रे री	यह घर राम का है।
अधिकरण	में, पर	नदी में तैरो।
संबोधन	हे, अरे, ओ	हे देव! हम पर कृपा करो।

Unleash the topper in you